

पशुओं में गर्भपात एवं रोकथाम के विभिन्न तरीके

शैलेन्द्र किशोर शीतल

सहायक प्राध्यापक, पशु मादरोग एवं प्रसूतिशास्त्र विभाग



बिहार पशुचिकित्सा महाविद्यालय ,

बिहार पशु विज्ञान विश्वविद्यालय, पटना

पशुओं में गर्भधारण करने के बाद भ्रूण का समय से पहले नष्ट होना या निष्कासन गर्भपात कहलाता है। यह आमतौर पर भ्रूण का गर्भाषय के अंदर मरने के कारण होता है। यदि भ्रूण की मौत 1-2 महीने के गर्भकाल में हो तो उसे प्रारंभिक भ्रूण मौत कहते हैं। यह भ्रूण आम तौर पर बिना किसी गर्भपात लक्षण के ही गर्भाषय द्वारा अवशोषित हो जाता है और हमें पता नहीं चल पाता है। गर्भावस्था के 2 महीने बाद सामान्यतः भ्रूण और अपरा उत्तकों का निष्कासन होता है। जब भ्रूण पूर्ण अवधि का हो एवं मृत पैदा हो तो उसे प्रायः मृत प्रसव कहते हैं। यह मृत प्रसव, मुष्किल जन्म और भ्रूण की मौत या किसी रोग के कारण गर्भाषय में मौत के कारण हो सकता है।

कारण:

पशुओं में मुख्यतः गर्भपात के दो कारण हैं—असंक्रामक कारण एवं संक्रामक कारण।

अ. असंक्रामक कारण: ये कारण निम्नांकित हैं:

1. भ्रूण में अनुवांषिक असामान्यताएं भी गर्भपात का कारण हो सकती हैं। गर्भाषय में भ्रूण

का विकास सही तरह से नहीं होता है जिससे गर्भपात होता है।

2. पर्यावरण के गर्मी के तनाव भी पशुओं के प्रजनन को प्रभावित करता है। हालांकि इसमें सामान्यतः गर्भपात नहीं होता है बल्कि गर्भाधान की समस्याएं पैदा होती हैं। अचानक पर्यावरण तापमान बढ़ने से भी गर्भपात हो सकता है।
3. टॉक्सिन के कारण भी गर्भपात या प्रारंभिक भ्रूण मौत हो सकता है। यह टॉक्सिन पादप जनित या अन्य हो सकता है। पादप जनित मायकोटॉक्सिन बहुत उच्च मात्रा में गर्भपात कर सकता है। अरगांट अल्कलॉइड्स बहुत सारे घासों के बीज के साथ पनपते हैं।
4. एस्टेरोजेनिक पदार्थ या चारा अधिक मात्रा में बहुत दिनों तक पशु को खिलाने से भी गर्भपात होता है।
5. प्रोजेस्टेरोन हारमोन की कमी से पशुओं में जल्दी गर्भपात हो जाता है।
6. ग्लूकोकॉर्टिकाइड्स या हाइड्रोकॉर्टिसोन देने से गर्भवती पशुओं में गर्भपात हो सकता है।

7. विटामिन ए की कमी से भी गर्भपात होता है।
8. पशुओं में आयोडीन की कमी से भी गर्भपात होता है।
9. किसी कारण से पशुओं में एलर्जी या सदमा भी गर्भपात करा सकता है।
10. यदि पशु को यौवनावस्था या प्रसव के तुरंत बाद प्रजनन कराते हैं तो अचानक गर्भपात हो सकता है।

ब. संक्रामक कारण:

क. जीवाणु जनित गर्भपात: एक्टिनोमाइसेस, बैसिलस, स्ट्रेप्टोकोकस और वातावरण में पाया जाने वाला अन्य जीवाणु गर्भपात करा सकता है। इन जीवों का स्थानांतरण आमतौर पर गाय के संचार प्रणाली के मार्ग से नाल और भ्रूण को मिलता है। अपरिपक्व प्रतिरक्षा प्रणाली के कारण भ्रूण जीवाणु के प्रति अति संवेदनशील होता है। जीवाणु के विकास से भ्रूण का मौत हो जाता है जिससे गर्भपात होता है। जीवाणु गर्भपात के कारण निम्नांकित है:

1. ब्रूसेल्ला एबोर्टस: इससे पशु में बैंग्स रोग या ब्रूसेलोसिस होता है, जिसमें पशुओं में गर्भकाल के अंतिम अवस्था में भ्रूण का गर्भपात होता है।

2. लेप्टोस्पाइरा प्रजाति: इससे सामान्यतः गर्भ की अंतिम तिमाही में गर्भपात होता है।

3. लिस्टेरिया मोनोसाइटोजेन्स (चक्कर रोग): इस बीमारी का फैलना अक्सर मशीन गुणवत्ता या खराब सिलेज में पाया जाने वाला उच्च जीवाणु संख्या है। इससे गायों में गर्भपात सर्म्पक के लगभग एक सप्ताह के बाद होता है, और गर्भावस्था के अंतिम तिमाही के दौरान सबसे अधिक होता है।

4. यूरियाप्लाज्मा और माइकोप्लाज्मा: यह आम तौर पर गर्भपात के असामान्य कारण माना जाता है। ये स्वास्थ्य गायों के जननांग में पाया जाता है।

स. विषाणु जनित गर्भपात

1. गोजातीय विषाणुजनित डायरिया (बी.वि.डी.): यह विषाणु गाय में रुधिरवाहिका के माध्यम से अपरा के द्वारा बढ़ रही भ्रूण तक पहुंचती है। यदि गाभिन गाय पहली तिमाही में विषाणु के सर्म्पक में आता है तो उसमें गर्भपात हो सकता है, और गर्भ गर्भाशय से बहार नहीं निकलता है तो यह अंदर ही ममिकृत हो सकता है।

2. संक्रामक गोजातीय राइनोटाइकीआइटिस विषाणु (आई.बी.आर.): यह पशुओं में गर्भपात का सबसे अधिक कारण है। गर्भपात सबसे अधिक 4 महीने से गर्भावस्था से अंतिम काल तक होते हैं।

द. कवक जनित गर्भपात

कवक भी गर्भावस्था के अंतिम 2 महीनों में डेयरी पशुओं में गर्भपात करा सकता है। ये आमतौर पर

सर्दियों और बसंत महीनों के दौरान होते हैं, जो फफूंदी लगा घास या सिलेज, पशुओं को खिलाने से होता है।



(चित्र 9 तीन माह का गर्भपात हुआ गाय का मृत बछड़ा)

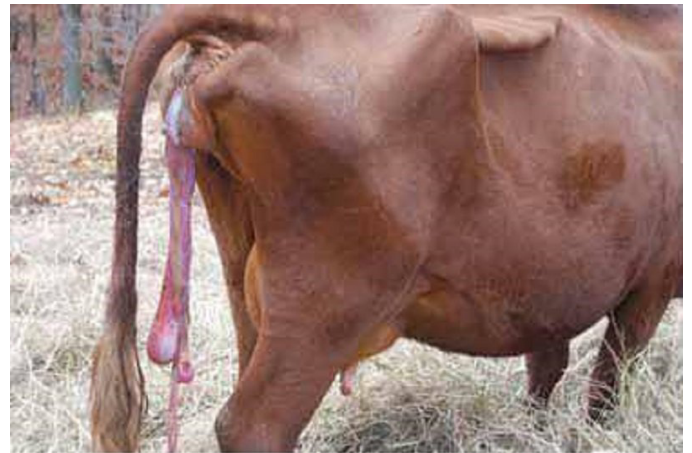
य. गोजातीय यौन रोग

ट्राइकोमोनास फोएटस और कैम्पिलोबैक्टर फोएटस प्रजाति, पशुओं में सबसे अधिक यौन रोग के साथ जुड़े दो जीव हैं। इस संक्रमण से पहली तिमाही में गर्भपात होता है।

लक्षण:

गर्भपात एक रोग का लक्षण है। सामान्यतः बीमारी के कारण गर्भाशय के अंदर का अविकसित बछड़ा बहुत दिनों तक जिन्दा नहीं रह पाता है, और उसका गर्भपात हो जाता है। सामान्य प्रसव एवं गर्भपात के लक्षण लगभग एक ही होता है, जैसे—थन का सूजना, बाहरी जननांगों का सूजना इत्यादि। कभी-कभी बछड़ों का निष्कासन बिना

किसी लक्षणों की चेतावनी के ही हो जाता है। पशुओं में गर्भपात के बाद उसके जननांगों से गन्दा, भूरा या पीला परतदार पदार्थ बाहर निकलती है। यदि इसका सही समय पर उपचार नहीं किया जाये तो पीव हो जाता है। पशुओं में जेर का रुकना और बांझपन भी गर्भपात रोग के लक्षणों में से एक है।



(चित्र 2 गर्भपात के बाद गाय में जेर का रुकना)

नियंत्रण और रोकथाम के तरीके

1. गैर संक्रामक गर्भपात के सामान्य रोकथाम के लिए अच्छा पशुपालन एवं उसका उचित प्रबंधन किया जाना चाहिए।
2. संक्रामक गर्भपात के नियंत्रण और रोकथाम के लिए पशुओं का झुण्ड नीति, स्क्रीनिंग सही समय पर होना चाहिए।
3. प्रत्येक संक्रामक गर्भपात कारकों के लिए उचित नियंत्रण उपाय करना चाहिए।

4. गाभिन पशुओं को हमेशा साफ सुथरे स्थान में रखें और कीटाणु नाशक घोल से उसकी सफाई करना चाहिए।
5. बीमार पशुओं को गाभिन पशुओं से अलग रखना चाहिए।
6. गर्भपात के कारण संक्रामक रोगों के खिलाफ उचित टीकाकरण समय-समय पर करना चाहिए।
7. प्रजनन एवं उपचार के अभिलेखों का रखरखाव सही तरीके से करना चाहिए ताकि पहले से गर्भवती पशुओं का गर्भाधान न हो।
8. साथ ही **वैसे** दवाओं का प्रयोग नहीं करना चाहिए जो पशुओं के गर्भपात का कारण बनें।
9. पशु **के** चारा भण्डारण में समुचित स्वच्छ बायोसेकुरिटी **की** उपाय **करनी** चाहिए।
10. पशु के चारे का मायकोटॉक्सिन एवं अन्य **पौधा** जनित टॉक्सिन के लिए व्यवस्थित मूल्यांकन समय-समय पर होना चाहिए।

11. पशु झुण्ड से एसट्रोजेनिक फीड को अलग करना चाहिए।
12. विटामिन ए एवं आयोडीन भी पशु **फीड** के साथ देना चाहिए।
13. यदि **पशुओं** का गर्भपात हो गया हो तो **उसे** अन्य पशुओं से अलग रखना चाहिए। साथ ही गर्भपात उत्तकों को अच्छी तरह से अलग कर नष्ट कर देना चाहिए।
14. गर्भपात के निदान के लिए पशुपालकों को तुरंत नजदीक के किसी पशु चिकित्सक से सलाह लेना चाहिए।
अतः गर्भपात का नियंत्रण तीन मुख्य सिद्धांतों पर निर्भर करता है—
 1. संक्रमण के प्रसार पर रोक;
 2. झुण्ड के प्रतिरक्षा का विकास
 3. प्रभावित पशुओं का इलाज।

इन तीनों मुख्य सिद्धांतों का पालन सही समय पर करने से पशुपालकों को पशुओं के गर्भपात से होने वाले नुकसान को बहुत हद तक कम किया जा सकता है।